SEMESTER - 3

CC- 11

South Asia 1950 Onwards

- **Unit -4 : Globalization and its impact on women and society**

  Part-1

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रा नंदन

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 08604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

वैश्वीकरण

वैश्वीकरण का सामान्य अर्थ है,सम्पूर्ण विश्व को एक मानना। यह अवधारणा अलग- अलग देशों के अस्तित्व को न मानकर सम्पूर्ण विश्व परिवार को "वसुधैव कुटुम्बकम" की अवधारणा के आधार पर स्वीकृति देती है। वैश्वीकरण एक नीति है,जिसके अंतर्गत आर्थिक गतिविधियों की कार्यकुशलता और उससे होने वाले लाभ की अधिकतम वृद्धि के लिए उसपर से सरकारी प्रतिबन्ध और नियंत्रण हटा लिए जाते हैं अथवा उसमे ढील दे दी जाती है,ताकि वह देश विस्वा के किसी भी हिस्से की आर्थिक गतिविधि के साथ जुड़कर अपना विकास कर सके और इसी के साथ इसमें निजीकरण को भी प्रोत्साहित किया गया है। भारत ने १९९१ से पूर्व वैश्वीकरण की अवधारणा नहीं अपनाई थी ;परन्तु १९९१ में ऐसी कई परिस्थितियां उत्पन्न हो गईं जिसके कारन उदारीकरण,निजीकरण और वैश्वीकरण की अवधारणा भारत को भी अपनानी पड़ी। १९९१ से पूर्व आर्थिक विकास को गति देने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र को महत्वपूर्ण भूमिका दी गई परन्तु सार्वजनिक क्षेत्र में फण्ड की कमी,लाल फीताशाही,भ्रष्ट वातावरण आदि के चलते पर्याप्त उन्नति नहीं कर सका। सार्वजनिक क्षेत्र में भारत उपलब्धियों के शिखर तक पहुंचे,इसके लिए निजी क्षेत्र पर कड़े प्रतिबन्ध लगा दिए गए परन्तु परिणाम उम्मीद के हिसाब से विपरीत ही निकल रहा था। १९९१ में देश की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर हो चुकी थी तथा विदेशी मुद्रा का भण्डार केवल

एक या दो सप्ताह के लिए ही शेष बचा था,ऋण की लगातार कमी हो रही थी। इस परिस्थिति से देश को उबारने के लिए एक नई आर्थिक नीति की महती आवश्यकता थी।

सरकार ने देश की उन्नति को ध्यान में रखते हुए उदारीकरण और निजीकरण को प्रोत्साहित करने की योजना बनाई थी। भूमंडलीकरण एक परिघटना न होकर एक प्रक्रिया है जो क्रमश एवं चरणबद्ध तरीके से वैश्विक समुदाय को एकीकृत करने का प्रयास कटर रही है। वैश्वीकरण विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं एवं समाजों के मध्य पारस्परिक निर्भरता,अंतर संबंद्धता और एकीकरण में ऐसे स्तर तक वृद्धि करने की प्रक्रिया है की विश्व के किसी एक हिस्से में घटित कोई घटना विश्व के अन्य हिस्सों के व्यक्तियों को प्रभावित करने लगे।

वैश्वीकरण का प्रभाव अत्यधिक व्यापक होता है। यह प्रत्येक व्यक्ति को भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रभावित करता है। जहाँ कुछ व्यक्तियों के लिए यहाँ नए अवसर प्रदान करने में सहायक हो सकता है वहीं कुछ अन्य के लिए यह आजीविका की हानि का कारण बन सकता है। यथा बाजार में चीन और कोरिया के रेशम के धागों के प्रवेश के कारण बिहार की रेशम काटने वाली एवं धागा बनाने वाली अनेक महिलाओं का रोजगार चौपट हो गया। बुनकरों एवं उपभोक्ताओं के द्वारा इन धागों के कम मूल्य और अधिक चमक के कारण इन्हे वरीयता दी गई। इसी प्रकार भारतीय समुद्री क्षेत्र में मछली पकड़ने के बड़े जहाजों के प्रवेश के कारण भी व्यापक विस्थापन देखने को मिला। इन जहाजों की उपस्थिति के कारण भारत में मछली पकड़ने वाले परंपरागत छोटे जहाजों के लिए उपलब्ध मछलियों की मात्रा सीमित हो

गई। इससे मछलियां छांटने सुखाने बेचने और जाल बुनने वाली महिलाओं की आजीविका नकारात्मक रूप में प्रभावित हुई है। इसी प्रकार सूडान में सस्ते गोंड के आयात के कारण जुलीफेरा से गोंद एकत्रित करने वाली गुजरात की महिलाओं को अपना रोजगार खोना पड़ा। साथ ही विकसित देशों से रददी कागज के आयात के कारण भारत के लगभग सभी शहरों में कूड़ा बीनने वाले लोगों को अपने रोजगार से हाथ धोना पड़ा।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वैश्वीकरण का सामाजिक महत्व अत्यधिक व्यापक है,परन्तु समाज के विभिन्न वर्गों पर इसका प्रभाव भिन्न-भिन्न होता है। इसलिए वैश्वीकरण के प्रभाव से सम्बंधित दृष्टिकोण में स्पष्ट विभाजन विद्यमान है। कुछ विद्वानों का मानना है कि एक बेहतर विश्व के निर्माण हेतु यह एक आवश्यक प्रक्रिया है जबकि कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि एक बेहतर विश्व के निर्माण हेतु यह एक आवश्यक प्रक्रिया है जबकि कुछ अन्य विद्वान् वैश्वीकरण के विभिन्न वर्गों पर पड़ने वाले भिन्न-भिन्न प्रभाव को भयावह मानते हैं। वे तर्क देते हैं कि इससे विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के कुछ व्यक्ति लाभ प्राप्त कर सकते हैं जबकि पहले से ही अपवर्जित एक बड़े वर्ग की स्थिति और अधिक दयनीय हो सकती है। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वान यह तर्क भी देते हैं कि वैश्वीकरण कोई नई अवधारणा नहीं है।

भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव :

वैश्वीकरण स्थानीय संस्कृति को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करता है। प्राचीन काल से ही भारत का सांस्कृतिक प्रभाव के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण रहा है और वह इसके कारण सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भी हुआ है। विगत कुछ दशकों में अनेक बड़े सांस्कृतिक परिवर्तन हुए है जिससे यह भय भी उत्पन्न हुआ है कि वैश्वीकरण के प्रभाव से भारतीय स्थानीय संस्कृतियां नष्ट भी हो जाएँगी। अतः वैश्वीकरण के सन्दर्भ में हमारे समाज में न केवल राजनीतिक और आर्थिक मुद्दे,बल्कि वस्त्रों,शैलियों,संगीत,फिल्मों,भाषाओं,शारीरिक भाषा आदि में परिवर्तन के सम्बन्ध में भी व्यापक वाद-विवाद होते रहते हैं। हालाँकि ये वाद -विवाद नए नहीं है, १९ वी सदी के समाज सुधारकों और राष्ट्रवादियों ने भी संस्कृति और परम्परा पर वाद -विवाद किये थे। इस प्रकार वर्त्तमान मुद्दे कुछ हद्द तक सामान है और कुछ हद्द तक भिन्न भी हैं। यह भिन्नता अधिकांशतः परिवर्तन के पैमाने एवं तीव्रता के सन्दर्भ में है।

इसे हम कई तरह से समझ सकते हैं :

* भोजन : भारत की खाद्य शैली अत्यधिक विशिष्ट है,किन्तु अब विदेशी व्यंजन भी अधिक सुगमता से और अधिक भारतीय स्वादानुसार उपलब्ध है,जैसे कि मैक्डोनाल्ड्स का पनीर टिक्का बर्गर। इससे व्यंजनों के विभिन्न प्रकारों की उपलबधता में वृद्धि हुई है,परिणामस्वरूप भोजन का विविधीकरण हुआ है।

* स्कूली स्तर से विद्यार्थियों को फ्रेंच,जर्मन और स्पेनिश भाषा का ज्ञान प्रदान करना भाषा पर वैश्वीकरण के प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

* सिनेमा : विदेशी फिल्मों की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है। हॉलीवुड, चाइनीज़,फ्रेंच,कोरियन फिल्मे शहरी युवाओं में अधिक लोकप्रिय है। इसके साथ -साथ इन विदेशी फिल्मों को स्थानीय भाषाओं में डब करना बढ़ते ग्लोबलाइजेशन का साक्ष्य है।

* त्यौहार : वैलेन्टाइन्स डे,फ्रेंडशिप डे का प्रचलन उत्सवों से सम्बंधित सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन को दर्शाता है। हालाँकि इन नवीन परिवर्तनों के साथ पारम्परिक त्यौहार समान उत्साह के साथ मनाये जाते हैं

* विवाह : विवाह के महत्व में कमी तथा तलाक़ सम्बन्धी घटनाओं,लीव-इन-रिलेशनशिप एवं एकल अभिभावकत्व सम्बन्धी प्रवृति में वृद्धि देखने को मिली है। पूर्व में विवाह को आत्माओं के बंधन के रूप में माना जाता था किन्तु वर्त्तमान समय में विवाह एक संविदात्मक एवं व्यावहारिक स्वरुप ग्रहण कर रहा है। यद्दपि विवाह के स्वरूपों में परिवर्तन के वावजूद इसका संस्थागत स्वरुप आज भी विद्यमान है।